



नारी

अपने रिश्तों का निवह कैसे करे

पति, सास-ससुर, ननद-देवर,
देवरानी-जेठानी, बेटा-बेटी, मां, जीजा,
पति के मित्र, विवाह पूर्व के मित्र, बॉस,
सहकर्मी, तथा अड़ोसी-पड़ोसियों से रिश्तों में
तालमेल, उनकी गरिमा, सावधानियां
सभी पर खुलकर विचार



नारी

अपने रिश्तों का निर्वाह कैसे करे

वर्तमान समय में तमाम तरह के रिश्तों को बड़ी खूबी के साथ निभाना सिखाने वाली आज की नारी के लिए उपयोगी पुस्तक।



- नारी के रिश्तों की दुनिया विवाह के बाद एकदम बदल जाती है, जैसे चमत्कार हो गया हो। कई नए-नए रिश्ते बन जाते हैं। उनसे बेहतर सरोकार रखना पड़ता है।
- और तब विवाह से पूर्व वाले परिवार के साथ रिश्ते भी और अधिक संवेदनशील बन जाते हैं।
- इनके अलावा सहेलियों से, पूर्व प्रेमी या मंगेतर से, घर के बाहर बॉस और सहकर्मियों से तथा अड़ोस-पड़ोस से रिश्ते भी अपना महत्व रखते हैं।
- बस, ज़रूरत है इन रिश्तों में आत्मीयता, घनिष्ठता और निरंतरता बनाए रखने की।
- इसके लिए आपको उदार एवं सामंजस्यपूर्ण व्यवहार करना होता है और आप उसमें सफल हुईं, तो समझिए आप भाग्यशाली हैं।
- यह पुस्तक रिश्तों के प्रति आपकी भूमिका का व्यावहारिक दर्पण है।

महिलोपयोगी श्रेष्ठ पुस्तकें

- | | |
|-----------------------------------|-----------------------------------|
| ➤ 1001 घर-गृहस्थी के काम की बातें | एन.डी. तिवारी |
| ➤ बनिए स्मार्ट हाउसवाइफ | शीला सलूजा/चुन्नीलाल सलूजा |
| ➤ बेटी की सच्ची सहेली-माँ | शीला सलूजा/चुन्नीलाल सलूजा |
| ➤ न्यू लेडीज़ हेल्थ गाइड | आशारानी व्होरा, अरुण सागर 'आनन्द' |
| ➤ होम ब्यूटी क्लीनिक | परवेश हांडा |
| ➤ घर बैठे सौंदर्य उपचार | अर्पणा मजूमदार |
| ➤ न्यू मॉडर्न कुकरी बुक | आशारानी व्होरा |

वी एण्ड एस पब्लिशर्स की पुस्तकें

देश-भर के रेलवे, रोडवेज़ तथा अन्य प्रमुख बुक स्टॉलों पर उपलब्ध हैं। अपनी मनपसंद पुस्तकों की मांग किसी भी नजदीकी बुक स्टॉल से करें। यदि न मिलें, तो हमें पत्र लिखें। हम आपको तुरंत भेज देंगे। इन पुस्तकों की निरंतर जानकारी पाने के लिए विस्तृत सूची-पत्र मंगवाएँ या हमारी वेबसाइट देखें!

www.vspublishers.com

नारी

अपने रिश्तों का
निर्वाह कैसे करे

चित्रा गर्ग



वी एंड एस पब्लिशर्स

प्रकाशक



वी एन एस पब्लिशर्स

F-2/16, अंसारी रोड, दरियागंज, नयी दिल्ली-110002

☎ 23240026, 23240027 • फ़ैक्स 011-23240028

E-mail: info@vspublishers.com • Website: www.vspublishers.com

शाखा: हैदराबाद

5-1-707/1, ब्रिज भवन (सेन्ट्रल बैंक ऑफ इण्डिया लेन के पास)

बैंक स्ट्रीट, कोटी, हैदराबाद - 500 095

☎ 040-24737290

E-mail: vspublishershdy@gmail.com

शाखा : मुम्बई

जयवंत इंडस्ट्रियल इस्टेट, 1st फ्लोर-108, तारदेव रोड

अपोजिट सोबो सेन्ट्रल, मुम्बई - 400 034

☎ 022-23510736

E-mail: vspublishersmum@gmail.com

फॉलो करें:



© कॉपीराइट: वी एन एस पब्लिशर्स

ISBN 978-93-505736-7-9

DISCLAIMER

इस पुस्तक में सटीक समय पर जानकारी उपलब्ध कराने का हर संभव प्रयास किया गया है। पुस्तक में संभावित त्रुटियों के लिए लेखक और प्रकाशक किसी भी प्रकार से जिम्मेदार नहीं होंगे। पुस्तक में प्रदान की गयी पाठ्य सामग्रियों की व्यापकता या सम्पूर्णता के लिए लेखक या प्रकाशक किसी प्रकार की वारंटी नहीं देते हैं।

पुस्तक में प्रदान की गयी सभी सामग्रियों को व्यावसायिक मार्गदर्शन के तहत सरल बनाया गया है। किसी भी प्रकार के उद्धरण या अतिरिक्त जानकारी के स्रोत के रूप में किसी संगठन या वेबसाइट के उल्लेखों का लेखक या प्रकाशक समर्थन नहीं करता है। यह भी संभव है कि पुस्तक के प्रकाशन के दौरान उद्धृत वेबसाइट हटा दी गयी हो।

इस पुस्तक में उल्लिखित विशेषज्ञ के राय का उपयोग करने का परिणाम लेखक और प्रकाशक के नियंत्रण से हटकर पाठक की परिस्थितियों और कारकों पर पूरी तरह निर्भर करेगा।

पुस्तक में दिये गये विचारों को आजमाने से पूर्व किसी विशेषज्ञ से सलाह लेना आवश्यक है। पाठक पुस्तक को पढ़ने से उत्पन्न कारकों के लिए पाठक स्वयं पूर्ण रूप से जिम्मेदार समझा जायेगा।

उचित मार्गदर्शन के लिए पुस्तक को माता-पिता एवं अभिभावक की निगरानी में पढ़ने की सलाह दी जाती है। इस पुस्तक के खरीददार स्वयं इसमें दिये गये सामग्रियों और जानकारी के उपयोग के लिए सम्पूर्ण जिम्मेदारी स्वीकार करते हैं। इस पुस्तक की सम्पूर्ण सामग्री का कॉपीराइट लेखक/प्रकाशक के पास रहेगा। कवर डिजाइन, टेक्स्ट या चित्रों का किसी भी प्रकार का उल्लंघन किसी इकाई द्वारा किसी भी रूप में कानूनी कार्रवाई को आमंत्रित करेगा और इसके परिणामों के लिए जिम्मेदार समझा जायेगा।

स्वकथन

हर व्यक्ति जीवन में किसी-न-किसी रिश्ते से बंधा रहता है। जन्म लेते ही बालक के रिश्तों का ताना-बाना बुना जाने लगता है। वह माता-पिता के साथ बेटे या बेटी के रिश्ते में बंध जाता है।

युवा होते-होते हर व्यक्ति के अनेक महत्वपूर्ण संबंध बनने लगते हैं। स्त्री की दुनिया तो विवाह के पश्चात यूँ बदल जाती है, मानो उसका पुनर्जन्म हुआ है। समाज में हर रिश्ते की अत्यंत अहम भूमिका तथा अलग मांग होती है। वही रिश्ते लंबे समय तक कायम रहते हैं, जिनमें समय की कसौटी पर खरा उतर सकने की क्षमता हो।

कोई भी रिश्ता यदि व्यक्ति की भावनाओं और उसके दिल से जुड़ा हो, तो उसका महत्व जीवन में सर्वाधिक होता है। यदि रिश्तों की प्रासंगिकता जीवन के सपनों व उसकी हकीकत से जुड़ी हो, तो उसे सदैव कायम रखना अत्यंत चुनौती पूर्ण कार्य है।

कोई भी संबंध या रिश्ता हो, उसे बनाने में समय लगता है, लेकिन उन संबंधों में निरंतरता बनाए रखना काफी मुश्किल कार्य है। प्रायः अच्छे संबंध भी कठिनाई से बनते हैं, लेकिन उन्हें स्थिर बनाए रखने में बड़ी कठिनाई का सामना करना पड़ता है। रिश्तों में स्नेह बना रहे, इसके लिए अथक प्रयास करने पड़ते हैं।

हर विवाहित स्त्री को जीवन में महत्वपूर्ण रिश्ते निभाने पड़ते हैं। पत्नी के अतिरिक्त उसे माँ, बहू, सास, सहेली आदि की महत्वपूर्ण भूमिका में जीवन बिताना होता है। किसी भी संबंध में यदि शिथिलता आ जाए, तो पुनः उन्हें मजबूत करना कठिन है। बेहतर यही है कि संबंधों में मजबूती व निरंतरता

बनाए रखी जाए। वास्तविकता तो यह है कि किसी भी रिश्ते में जुड़ने से अधिक चुनौतीपूर्ण है, उसे निभाना।

मैंने इस पुस्तक में इन्हीं रिश्तों को आधार बनाकर कुछ कहने का प्रयास किया है। मेरा विश्वास है कि इसमें दिए गए सुझाव व टिप्स अमल में लाकर स्त्री के जीवन में निखार आ सकता है। वह सही ढंग से खुशहाल पारिवारिक जीवन बिता सकती है। यदि उसके जीवन में जीवन साथी या अन्य रिश्तों को लेकर भ्रम है या कोई कटुता आ गई है, तो स्त्री इसमें दिए गए तौर-तरीकों को अपना कर प्यार की खोई हुई रौनक वापस ला सकती है। आधुनिक सामाजिक संदर्भ को ध्यान में रख कर लिखे गए ये सभी अध्याय अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। ये जीवन के रिश्तों के बिखरे मोतियों को एक सूत्र में बांध सकते हैं और इस तरह परिवारों में स्थिरता तथा निरंतरता बनी रह सकती है।

बी-150, ईस्ट ऑफ कैलाश, नई दिल्ली-110065

— चित्रा गर्ग

अंदर के पृष्ठों में

पति-पत्नी के रिश्ते

जीवन-सफर को सुहाना बनाएं	9
पति-पत्नी के बीच एक प्याली चाय का मज़ा	18
पति को दीवाना बनाए रखें	20
पत्नी को श्रेय देना कितना महत्वपूर्ण	25
जरूरी है पत्नी को समय देना	28
बेइज्जती न कीजिए अपनी पत्नी की	31
पति-पत्नी के बीच बेहूदा मज़ाक ठीक नहीं	35
जब कोई बात बिगड़ जाए	38
स्त्री ही दोषी क्यों	40
पति के मन में शक की दीवार न उठने दें	44
पति की सेक्रेटरी पत्नी के शक की धुरी	50
क्या करें विवाह पूर्व के प्रेमी से मिलने पर	56
विवाहेतेर संबंधों में सुख की तलाश कितनी उचित	62

देवर-भाभी के रिश्ते कितने नाजुक

देवर-भाभी की छेड़छाड़ मर्यादा न लांघें	72
--	------	----

ननद-भाभी के रिश्ते

ननद-भाभी में आपसी सहयोग कितना जरूरी	76
-------------------------------------	------	----

देवर-जेठ से रिश्ते

पति के भाइयों से अनबन और पत्नी का दायित्व	84
---	------	----

सास-बहू के रिश्ते

सासु मां : पति के दिल तक पहुंचने का रास्ता	88
मधुर बोलें, सम्मान पाएं	91
रिश्तों की मज़बूत नींव-आत्मीयता	95
अच्छी सास वही, जो बहू को सिखाए सही	100
सास का दिल क्यों नहीं जीत पाती है बहू	105
जब कोई मंथरा चरित्र मिल जाए	109

ससुराल के अन्य रिश्ते

ससुर को पूरी तरह सम्मान दें	114
बहू ससुराल में सबका मन कैसे जीते	118
जेठानी-देवरानी के रिश्तों में तकरार	121
मेहमानों के ऊधमी बच्चे	126
बेटी के घर में मायके की दखलअंदाज़ी	130

जीजा-साली के रिश्ते

जीजा के लट्टू होने पर	136
-----------------------	------	-----

सहेली से रिश्ते

असहज यौन संबंध बर्बादी का रास्ता	140
प्रेमी या मंगेतर से रिश्तों में मर्यादा	146

कामकाजी नववधुओं के रिश्ते

पुरुष सहकर्मियों से रिश्ते	152
बॉस से रिश्ते	157

मां-बेटी के रिश्ते

बेटी में आत्मबल जगाएं	162
बड़ी हो रही बेटी की सहेली बनें	169
लड़की दिखाना भी एक कला	177
मां-बेटी में कैसी होड़	180

मां-बेटे के रिश्ते

बेटे को घरेलू काम भी सिखाएं	186
-----------------------------	------	-----

पति-पत्नी के रिश्ते

जीवन के सफ़र को सुहाना बनाएं

पत्नियों की अकसर शिकायत रहती है कि पति शाम को घर आने के पश्चात् भी अपने खयालों में खोए रहते हैं अथवा पहले जैसे रोमांटिक नहीं रहे। ऐसे में यदि पत्नियां कोई बात या शिकायत अपने पति से करती हैं, तो वे उसे अनसुनी कर देते हैं। विवाह के कुछ वर्ष पश्चात् ही प्रायः पति-पत्नी के रिश्तों में ऐसी नीरसता आने लगती है। कहीं-कहीं यह नीरसता कटुता का रूप भी धारण कर लेती है। रिश्तों की ये दूरियां अकसर बढ़ती ही जाती हैं। पत्नियां यदि आरंभ से ही कुछ बातों का ध्यान रखें, तो रिश्तों में गर्माहट बनी रह सकती है। रिश्ते बनाना आसान होता है, लेकिन रिश्ते निभाना मुश्किल है और रिश्तों की गर्माहट बनाए रखना और भी मुश्किल है। उससे अधिक सरल कार्य होता है रिश्तों को तोड़ना। रिश्ते टूटने में जरा भी वक्त नहीं लगता, लेकिन यहां हमारा उद्देश्य रिश्तों को जोड़ना है, उसमें मज़बूती और निरंतरता बनाए रखना है। तमाम तरह के रिश्तेदारों के बीच रहते एक लम्बा सफर तय करना होता है। सफर सुखद एवं मंगलमय हो, यही कामना बनाए रखना ज़रूरी है।

हमारे समाज में चाहे कितने ही बदलाव आ जाएं, लोग कितने ही आधुनिक हो जाएं, लेकिन पति-पत्नी के लंबे व सुखी वैवाहिक जीवन का अपना ही महत्त्व है। वास्तविकता भी यही है कि सदैव जीवन साथी बन कर रहने जैसा सुख संसार में कोई दूसरा नहीं। किसी भी स्त्री को अपने पति के साथ अधिक मान-सम्मान और आत्मिक संतुष्टि मिलती है।

जीवन का सच्चा सुख पति-पत्नी के अटूट संबंधों पर निर्भर करता है। घनिष्ठ प्रेम संबंधों का आनंद ही निराला है, जो अपने पति को अपना बनाए रखने में है। यदि आप कुछ खास बातों का ध्यान रखें, तो आपके प्यार में जादू-सा असर होगा और रिश्तों की गर्माहट सदैव महसूस होगी।



पति की आदतों को पहचानें व उनसे एक राय हों

सबसे प्रथम और महत्त्वपूर्ण बात है पति की आदतों को पहचानना। उन्हें क्या पसंद है, क्या नापसंद है, इस बात का पत्नी को सदैव खयाल रखना चाहिए। यदि पति-पत्नी की किसी बात पर एक राय न हो, तो बहस नहीं करना चाहिए। यदि पति किसी ऐसी बात पर अपनी जिद पूरी करना चाहता है, जिसके कोई तात्कालिक या दूरगामी परिणाम आपके सामाजिक सम्मान और बच्चों के भविष्य पर गलत प्रभाव नहीं डाल रहे हों, तो बहस या जिद करने का कोई लाभ नहीं।

पत्नी को यह बात सदैव ध्यान रखना चाहिए कि सुखी पत्नी वही होती है, जो पति की राय-से-राय मिलाकर चलती है। उनका परिवार सुखी परिवार कहलाता है, क्योंकि बच्चे भी उसी प्रकार की भावनाओं को अपनाते हैं। प्राकृतिक रूप से सभी पुरुषों का भावावेश तीव्र होता है और उसकी अभिव्यक्ति की इच्छा भी। इसका मूल कारण प्रायः सभी पुरुषों में अहम (इगो) की भावना का प्रधान होना है। इसी कारण वे अपनी बात सदैव ऊपर रखना चाहते हैं। ऐसे में यह समझना कि महिलाओं की कोई इज्जत नहीं, कोई इच्छा या मरजी नहीं होती, सर्वथा गलत है। क्योंकि पुरुषों में भावावेश जितना तीव्र होता है, उतना ही जल्द

शांत भी हो जाता है। आपने स्वयं देखा होगा कि यदि स्त्री अपने पति की इच्छानुसार कार्य करती है, तो पति अपनी पत्नी का बहुत खयाल रखते हैं और कुछ पुरुष तो पत्नियों के इतने कायल हो जाते हैं कि पत्नी की हर इच्छा का सम्मान करके पूरा करने का प्रयास करते हैं। महत्त्वपूर्ण बात यह है कि दूसरे की इच्छा पूर्ति की पहल पहले स्त्री को ही करनी पड़ती है। वह पति को खुश रखकर अपनी हर बात मनवा सकती है।

अच्छी पत्नी अच्छी श्रोता

किसी भी पत्नी के लिए यह अत्यंत महत्त्वपूर्ण है कि वह एक अच्छी श्रोता बने, अर्थात् पति की बातों में टोका-टाकी किए बिना पति की बात को ध्यान से सुने। यदि पत्नी को कोई बात गलत लगे या अपनी बात कहनी हो, तो पति की बात पूरी होने पर कहने का प्रयास करे। अधिकांश पति यही चाहते हैं कि पत्नी उनकी बात को इतनी अहमियत दे कि वे जैसा कहें, पत्नी वैसा ही माने। ऐसे में इसका यह तात्पर्य नहीं है कि पत्नी, पति की बातें सुनते समय बिलकुल ज़बान सिल ले और चुपचाप ही बैठी रहे। कहने का तात्पर्य है कि पत्नी को अपने तर्कों द्वारा पति पर हावी होने का प्रयास नहीं करना चाहिए। पति की बात को धैर्य पूर्वक सुनने का प्रयास करना चाहिए, उस बातचीत की प्रक्रिया में पत्नी को पूरी तरह शामिल रहना चाहिए, लेकिन बहुत अधिक बोलकर पति का मूड खराब नहीं करना चाहिए। पति को अधिक बोलने का मौका देकर स्वयं उसकी बात सुनने का प्रयास करना चाहिए, जिससे उसके भावावेश की अभिव्यक्ति शांत हो सके। ऐसे पतियों के हृदय में भावावेश के शांत होते ही जो दूसरा भाव उमड़ता है, वह निश्चित ही तीव्र प्रेम होता है।

लेकिन यदि पति अधिक बोलना पसंद करता है, तो उसके साथ विभिन्न विषयों पर चर्चा करना पत्नी के लिए अच्छा रहता है। विभिन्न सामयिक, सामाजिक, राजनीतिक, फिल्मी, टीवी विषयों पर चर्चा की जा सकती है। इसके लिए पत्नी को विभिन्न विषयों की जानकारी होनी आवश्यक है। यदि पत्नी पढ़ी-लिखी है, तो पत्र-पत्रिकाओं, टीवी व समाचार पत्रों के माध्यम से सभी आधुनिक विषयों की जानकारी आसानी से रखी जा सकती है। किन्तु यदि आप इतनी जानकारी नहीं रखतीं, तो वैचारिक समर्थन करके पति के मन को शांत कर सकती हैं। यदि पति कभी चिंतित या परेशान हो, तो उसके मन बहलाव के लिए किसी ऐसे विषय पर बात करने का प्रयास करना चाहिए, जिससे उसका ध्यान उस चिंता या समस्या से परे हट जाए।

बहस से बचें

यदि पति और पत्नी में कभी बहस की स्थिति आ जाए और बात बिगड़ने लगे, तो तुरंत बहस रोकने का इंतजाम करना चाहिए। पत्नी इसके लिए गैस पर दूध या सब्जी का बहाना बना कर हट सकती है। फ्रिज से कुछ लाने या पानी पीने जा सकती है, कुछ काम याद आने का बहाना बनाकर बात समाप्त कर सकती है। कुछ देर आप सामने से हटेंगी, तो शांति होगी और विस्फोटक स्थिति आने से बच जाएगी। बहस होती रही, तो झगड़े की नौबत आ सकती है। जहां तक हो पत्नी को ध्यान रखना चाहिए कि वह अपशब्दों का प्रयोग न करे। ऐसे शब्दों का प्रयोग पति को बुरी भाषा बोलने के लिए प्रेरित करेगा। कोई भी पति अपनी बात ऊपर रखना पसंद करता है। यदि कभी बहस या झगड़ा हो भी जाए, तो रात को सोने के पहले सुलह-सफाई अवश्य कर लेनी चाहिए, वरना रात-भर में तनाव और बढ़ जाएगा। फिर तनाव की स्थिति कई दिन तक चलती रहेगी। यदि किसी पार्टी में आपका पति आपसे अपशब्द बोलता है, तो वहीं बहस न करने लगे, कारण जानने का प्रयास करें, घर आकर शांति से बात करें।

पति की भावनाओं को समझें

पति की भावनाओं को सदैव समझने का प्रयास करना चाहिए, आपको अपने विभिन्न व्यक्तिगत व पारिवारिक विषयों पर चर्चा करके पति की राय जानते रहना चाहिए। इसके अतिरिक्त दैनिक दिनचर्या की महत्वपूर्ण बातों की जानकारी पति को अवश्य देनी चाहिए। इस प्रकार की चर्चा करते रहने से पत्नी को पति की इच्छा व सोच की सही जानकारी रह सकेगी और एक दूसरे का विश्वास तथा आत्मीयता मजबूत होगी।

धैर्य रखें व मनमुटाव से बचें

यदि किसी बात पर आपकी व आपके पति की अनबन हो जाए या पति को किसी छोटी-बड़ी बात पर क्रोध आ जाए, तो पत्नी को उस समय अत्यंत धैर्य के साथ शांत रहना चाहिए। यदि पति के क्रोध की अवस्था में पत्नी बहस करती है, तो बात बढ़ जाती है और झगड़े व कलह की नौबत आ जाती है। पत्नी को चाहिए कि शांत रहकर वातावरण को शांत बनाने का प्रयास करे। पति के क्रोध शांत होने के पश्चात् कुछ देर बाद ही सामान्य बातचीत शुरू कर दे, जैसे कि कुछ हुआ ही न हो। 50 प्रतिशत मामलों में ऐसा होता है कि पत्नी की गलती न हो, लेकिन

यदि ऐसी स्थिति हो और पति को क्रोध आ जाए, तो उस समय घर में शांति रखने के लिए पत्नी का चुप रहना ही अच्छा है। जब बाद में पति का मूड अच्छा या सामान्य हो, तब पति के सामने अपनी स्थिति स्पष्ट कर देनी चाहिए। ऐसे में कुछ पति अपनी पत्नी से जबरदस्ती यह कहलाने का प्रयास करते हैं कि गलती उसकी (पत्नी की) ही है। शांति बनाए रखने के लिए कभी-कभी यह स्वीकार कर लेना या चुप रहना ही श्रेयस्कर है कि हां मेरी ही गलती थी, बेशक गलती न हो। लड़ाई-झगड़े की स्थिति को भूलने का प्रयास करना ही श्रेष्ठ है। पति की कही बातों या मनमुटाव को मन में रखने से पत्नी के मन में भी क्रोध पैदा होता रहता है और कहीं-न-कहीं वह भावनाओं के रूप में फूट पड़ता है। पति से अच्छे संबंध बनाए रखने के लिए पति की गलतियों या गलत बातों को भूलना पत्नी के लिए सुखमय जीवन की शुरुआत हो सकती है। ध्यान रखें कि आपका एक-दो बार का ऐसा व्यवहार आपके पति को स्वयं उनकी गलती का अहसास करा देगा और फिर वे आपकी शांति को आपकी गलती मानने की भूल नहीं करेंगे।

पति की मां यानी सास का ध्यान रखें

पति का प्यार आपके प्रति सदैव बना रहे, इसके लिए पति का ध्यान रखने के अतिरिक्त पत्नी को उनकी मां का भी खूब ध्यान रखना चाहिए। पति का प्यार आपका अत्यंत व्यक्तिगत मामला है और उनकी मां से उनका अति नजदीकी व व्यक्तिगत रिश्ता है। इसलिए यदि पत्नी, पति की मां को खूब प्यार करती है, उनका मान-सम्मान करती है, तो पति की नजरों में पत्नी की इज्जत बढ़ जाती है। हर व्यक्ति अपनी मां को बेहद प्यार करता है। प्रायः पुरुष अपने इस प्यार को दर्शाना नहीं चाहते, परंतु मन के भीतर वे भी अपनी मां को उतना ही प्यार करते हैं, जितना एक स्त्री अपनी मां से करती है। अतः यदि पत्नी अपने पति का प्यार पाना चाहती है, तो उसे पति के साथ-साथ उसकी मां से भी प्यार करना चाहिए।

सास-बहू के रिश्तों में कड़ुवाहट का मुख्य कारण नारी मन की प्रेम पर एकाधिकार की भावना ही होती है। मां भी अंततः नारी ही है। वह चाहती है कि वह अपने पुत्र से जो प्रेम करती और पाती रही है, वह आगे भी मिलता रहे। शादी के बाद पति का ध्यान पत्नी की ओर झुक जाने के कारण इस भावना की पूर्ति में बाधा पड़ती है, और विरोध हो जाता है। आप यदि सास को प्रेम और सम्मान देती हैं, तो उनके मन में अपना प्यार छिनने की कुंठा नहीं पैदा होगी और वे आपसे सदैव

अच्छा व्यवहार करेंगी। अतः सास की भावनाओं को समझें। उन्हें पूरा सम्मान दें। परिवार में पति के छोटे भाई-बहनों से बड़प्पन का व्यवहार आपके प्रति पति का प्यार बढ़ा देगा। अतः बड़ों का सम्मान व छोटों को प्यार की कला सीखनी चाहिए।

सज-संवर कर आकर्षक बनी रहें

पति को सदैव अपना बनाए रखने के लिए सदैव आकर्षक बने रहने का प्रयास करें। अपने स्वास्थ्य व व्यक्तित्व का ध्यान रखते हुए पत्नी को चाहिए कि वह सदैव चुस्त व आकर्षक दिखाई दे। कभी पति परेशान व चिंताग्रस्त हो, तो पत्नी अपने व्यवहार; मधुर मुस्कान व आंखों के हाव-भाव से वातावरण का रुख बदलकर उसे हलका-फुलका बना सकती है। पति-पत्नी के संबंधों में पत्नी का आकर्षक व्यवहार व व्यक्तित्व अत्यंत महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। पुरुष स्वाभाविक रूप से पत्नी की ओर खिंचाव महसूस करके अपनी चिंता को भूल जाता है। यदि पति-पत्नी आधुनिक हों, तो पत्नी आधुनिक वस्त्र पहन कर पति को आकृष्ट कर सकती है। इस प्रकार पति, पत्नी से अधिक जुड़ाव महसूस करता है। उसे यह अहसास होता है कि पत्नी उसकी परेशानियों व चिंताओं को महसूस करती है, अतः वह पत्नी से प्रभावित होता रहता है।

पति को रोमांटिक बनने का मौका दें

कभी-कभी पति के साथ कैंडल लाइट डिनर पर जाने से पति का मूड बदल जाता है। उसने अरसे से आपके चेहरे को निहार कर आपकी आंखों में नहीं देखा होता है। ऐसा मौका आने पर पति रोमांटिक हो जाता है और आपके प्रति आकर्षित रहने लगता है। बदलाव के लिए रेस्टोरेंट या होटल के स्थान पर चांदनी में खुले स्थान पर सैर की जा सकती है।

पति की सलाहकार बनें

यदि पति किसी बात पर परेशान हो अथवा किसी स्थिति में कोई निर्णय न ले पा रहा हो, तो पत्नी को चाहिए कि यथा संभव अपनी सलाह देने का प्रयास करे। ऐसे में पत्नी को बहुत ही संतुलित व्यवहार अपनाना चाहिए, ताकि पति को ऐसा महसूस न हो कि पत्नी जरूरत से ज्यादा टांग अड़ा रही है। अतः पत्नी को पति के रुख के अनुसार पति के निर्णय में भागीदार बनने का प्रयास करना तो चाहिए, लेकिन इस बात का विशेष ध्यान रखना चाहिए कि जिस विषय पर निर्णय

लिया जा रहा है, वह यदि पत्नी या घर से संबंधित नहीं है और पति पत्नी से इस बारे में सलाह नहीं करना चाहता, तो वह उस विषय में अपनी अधिक रुचि न दिखाए।

पत्नी को चाहिए कि वह अपनी योग्यता, व्यवहार व क्रियाकलाप द्वारा अपने पति को इतना प्रभावित कर ले कि पति स्वयं ही अपनी गतिविधियों व क्रियाकलापों की जानकारी पत्नी को देता रहे। उससे विचार-विमर्श करने को उत्सुक रहे। उसे लगे कि पत्नी की योग्यता उसके निर्णय लेने में सहायक है या फिर पत्नी का रूप और स्वभाव उसे चिंता से मुक्त करने में सहायक है, तो ऐसी स्थिति में पति का अन्य स्त्रियों या मित्रों की अपेक्षा पत्नी को महत्त्व देना स्वाभाविक ही होगा।

पति की आंखों में आंखें डाल कर बातें करें

यदि आप अपने पति के साथ घूमने जाती हैं, किसी पार्टी में जाती हैं, बाजार जाती हैं अथवा किसी बैंक या कार्यालय में जाती हैं, तो ध्यान रखिए कि कभी-कभी पति की आंखों में आंखें डालकर बातें करें। इससे दोनों के बीच संबंध प्रगाढ़ होते हैं और एक दूसरे के प्रति खिंचाव व आकर्षण बना रहता है। यूं भी पति के साथ संबंधों में प्रगाढ़ता बनाए रखने के लिए कभी-कभी पारस्परिक संबंधों व सेक्स पर घर में फुरसत में बातचीत करनी चाहिए।

पति ही आपका सच्चा मित्र

पति-पत्नी के संबंधों में निरंतरता बनाए रखने के लिए उनमें मित्रता के भाव जगाने चाहिए। विवाह के पूर्व लड़कों व लड़कियों के अपने मित्र व सहेलियां होती हैं। हर व्यक्ति के कुछ मित्र ऐसे होते हैं, जिन्हें वह अपने बेस्ट फ्रेंड का दर्जा देता है। बेस्ट फ्रेंड से व्यक्ति अपने दिल की हर बात कह सकता है। अपनी चिंता, परेशानी, खुशी, गम, ग्लानि अथवा व्यथा के भाव व्यक्ति अपने बेस्ट फ्रेंड से ही बांट सकता है। प्रायः विवाह के पश्चात् कुछ लोगों के बेस्ट फ्रेंड बदल जाते हैं तथा कुछ के वही रहते हैं। पत्नी को चाहिए कि पति को ही अपना बेस्ट फ्रेंड समझे।

पति के साथ मित्रता का भाव होने से पत्नी पति के साथ अपने विचारों का आदान-प्रदान व अपेक्षाओं का विवरण आसानी से कर सकती है। ऐसे में पति पत्नी में विश्वास की भावना बढ़ती है। यदि उनमें मित्रता का भाव बना रहता है, तो अपनेपन का भाव बढ़ता जाता है।

कुछ स्त्रियां अपने मन में यह धारणा पाले रखती हैं कि विवाह समाज में जुड़ी परंपराओं व आवश्यकताओं का नाम है। वे इसे मित्रता से नहीं जोड़ पातीं। ऐसे में स्त्रियां पति के अतिरिक्त किसी अन्य स्त्री या पुरुष में अपना दोस्त तलाशती हैं। प्रायः यह भ्रामक धारणा लोगों के मन में रहती है कि पति-पत्नी में मित्रता नहीं होती। अतः पारिवारिक विषयों के अतिरिक्त अन्य विषयों पर सलाह मशविरा वे अपने मित्रों से ही कर सकते हैं।

वास्तव में पति-पत्नी के बीच दोस्ताना संबंध उनमें साहचर्य को बढ़ाते हैं। उनके रिश्तों में निरंतरता बनी रहती है। यदि उनमें आपसी मित्रता की भावना न हो, तो रिश्तों की चाहत लंबे समय तक नहीं रह पाती। मित्रता की भावना होने से आप अपने पति की कमजोरियां जानते हुए भी उनसे बेहद प्यार करेंगी जैसे एक मित्र से करती हैं। पति-पत्नी की मित्रता दांपत्य को समृद्ध बनाती है और उनमें प्यार की अभिव्यक्ति बढ़ती ही जाती है। सामान्यतया यही देखा जाता है कि पति को बेस्ट फ्रेंड मान लेने से पति-पत्नी का वैवाहिक जीवन काफी सफल होता है।

गलतियों को नज़रअंदाज़ करें

पति की छोटी-मोटी गलतियों को नज़रअंदाज़ करने की आदत डालनी चाहिए। पत्नी को यह समझना चाहिए कि हर इंसान से गलतियां होती हैं। हर व्यक्ति में कुछ अच्छाइयां होती हैं और कुछ बुराइयां। अपने पति की अच्छी बातों की ओर ध्यान देना चाहिए। उनकी गलतियां दूढ़कर झगड़ा करने से परिवार में तनाव बढ़ता है। यदि पत्नी पति की गलतियों पर माथा-पच्ची नहीं करेगी, तो जल्दी ही भूल जाएगी। किंतु यदि इन पर माथा-पच्ची करती रही, तो उसे क्रोध आएगा। क्रोध की यह स्थिति प्रेम को तो समाप्त कर ही देगी, आपसी मन-मुटाव का भी कारण बन जाएगी। अतः छोटी-मोटी गलतियों को भूलकर पत्नी को पति की भावनाओं का ख्याल रखना चाहिए। उसे प्यार और सम्मान देना चाहिए। ध्यान रखें कि आत्मीयता पूर्ण व्यवहार, मुस्कराकर बस करने की कला आपके दांपत्य जीवन को स्वर्ग बना देगी।

इस प्रकार की अनेक छोटी-छोटी बातों को ध्यान में रखकर पत्नी सदैव पति का दिल जीत सकती है और पति के आकर्षण का केंद्र बनी रह सकती है।

पति-पत्नी के बीच एक प्याली चाय का मज़ा

आशीष अपने ऑफिस से थका-हारा लौटा, तो घर में घुसते ही उसने अपनी पत्नी को आवाज दी, 'नेहा आओ जरा चाय हो जाए।' नेहा आई और बोली ठीक है, मैं आपको चाय पिलाए देती हूँ, आपको पता है कि मैं चाय तो पीती नहीं। आशीष बुझा-बुझा सा बोला, 'रहने दो क्या मजा आएगा अकेले चाय पीने में। मैं बहुत थका हुआ था।'

जिंदगी में ऐसा अकसर होता है कि पति-पत्नी के साथ कुछ पल बिताना चाहता है और उसके लिए बहाने खोजता है। पत्नी यदि पति की भावनाओं को समझती है, तो कभी-कभी इच्छा न होते हुए भी उसका साथ देती है।

दरअसल प्रातः की चाय हो या शाम की चाय, चाय की चुस्कियां लेते हुए पति को पत्नी का और पत्नी को पति का साथ खूब भाता है। इस बहाने पति-पत्नी दोनों ही एक दूसरे से साथ बैठ कर कुछ आराम के क्षण बिताते हैं।

इस भागदौड़-भरी जिंदगी में किसी के भी पास वक्त नहीं है। चाहे पुरुष हो या स्त्री हर किसी के पास कार्यों का ऐसा अंबार लगा रहता है कि जिंदगी में हरदम व्यस्तता बनी ही रहती है। ऐसे में चाय का एक प्याला चुस्ती और आराम के पल प्रदान करता है।

कनु को ही लें। वह एक बड़े दफ्तर में सीनियर ऑफिसर के पद पर कार्यरत है। पति के साथ-साथ वह भी सुबह ही घर से निकल जाती है और फिर शाम को थकी हारी घर वापस लौटती है। लेकिन सुबह-सुबह उसकी चुस्ती और जोश देखने लायक होता है। वह सुबह ट्रे में चाय लेकर चहकती हुई अपने पति को जगाने पहुंचती है, तो पति झट से चुस्त होकर उसे अपनी बाहों में भर लेता है। फिर पति-पत्नी साथ बैठकर चाय पीते हैं और गपशप करते हैं। पूरे दिन में उन दोनों को इतने फुर्त के क्षण नहीं मिलते, जितने कि सुबह की चाय के वक्त